ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-6* September-2021
Anthology : The Research

भारतीय समाज में मीडिया के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Sociological Study of the Impact of Media in Indian Society

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

बटुक नाथ
पूर्व शोध छात्र,
समाजशास्त्र विभाग,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल
विश्वविद्यालय, जौनपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय संवैधानिक व्यवस्थाओं के अनुसार जैसे लोकतांत्रिक देशों में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्रियाकलापों पर नजर रखने के लिए मीडिया को चौथे स्तंभ के रूप में विद्यमान है |मीडिया का भारतीय समाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव रहा है | आधुनिकता,उत्तर-आधुनिकता तथा वैश्वीकरण में भी मीडिया का प्रमुख योगदान रहा है | मोबाइल, टेबलेट, लैपटॉप, इंटरनेट ने मीडिया को प्रोत्साहित किया है, और इन सब संचार के माध्यमों से वर्तमान मीडिया पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ढंग से प्रभाव पड़ा है | भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों ने मीडिया के प्रमुख स्तंभ पत्रकारिता के उच्च नैतिक आदर्शों पर चलते हुए उन्होंने देश को जगाया, प्रेरित किया तथा ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया |

According to the Indian constitutional systems, such as in democratic countries, the media exists as the fourth pillar to monitor the activities of the legislature, executive and judiciary. Media has also been a major contributor to modernity, post-modernity and globalization. Mobiles, tablets, laptops, internet have encouraged the media, and all these means of communication have had an impact on the present media both in a positive and negative way. In the freedom struggle of India, the freedom fighters, following the high moral ideals of journalism, the main pillar of the media, awakened the country, inspired and prepared to fight against the British government.

मुख्य शब्द : सीमांत तथा वंचित वर्ग, मद्यपान, समाज, शिक्षा |
Keywords: Marginalized and marginalized sections, Alcoholism, Society, Education

प्रस्तावना

भारत एक लोकतंत्रात्मक देश है | लोकतांत्रिक देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्रिया कलापों पर नजर रखने के लिए मीडिया को "चौथे स्तंभ" के रूप में जाना जाता है |18 वी शताब्दी के बाद से खासकर अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन और फ्रांसीसी क्रांति के समय से जनता तक पहुंचने और उन्हें जागरूक कर सक्षम बनाने में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका अदा करें तो किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है | मीडिया एक समग्र तंत्र है जिसमें प्रिंटिंग प्रेस, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, रेडियो, सिनेमा, इंटरनेट आदि सूचना के माध्यम सम्मिलित होते हैं | यदि समाज में मीडिया की भूमिका की बात करें तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज के मीडिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है? संबंधों का परस्पर ताना-बाना जिसमें विवेकवान और विचारशील मनुष्यों वाले समुदायों का अस्तित्व होता है |

भारतीय समाज हो या अंतरराष्ट्रीय मामलों जिसने निर्णय मीडिया के प्रभाव को देखा जाए तो इसका प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रहा है | प्रभाव पर ध्यान देने से स्पष्ट होता है कि मीडिया का समाज में शक्ति महत्व एवं उपयोगिता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभावों में काफी शक्ति महत्ता एवं उपयोगिता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभाव में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन साथ-साथ इसके नकारात्मक प्रभाव भी उभर कर सामने आए हैं | मीडिया ने जहां जनता को निर्भरता पूर्व जागरूक करने भ्रष्टाचार को उजागर करने, सड़क पर तार्किक नियंत्रण एवं जनहित कार्यों में अभिवृद्धि में योगदान दिया है, वहीं लालच भय,द्वेष,स्पर्धा, दुर्भावना एवं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक कुचक्र में फसकर अपनी भूमिका को कलंकित भी किया है | व्यक्तिगत या संस्थागत निहित स्वार्थों के लिए यलोजर्नलिज्म अपनाना, ब्लैकमेल द्वारा दूसरों का शोषण करना, चटपटी खबरों को तवज्जो देना और खबरों को तोड़ मरोड़ करना पेश करना दंगे भड़काने वाली खबरें प्रकाशित करना, घटनाओं और कथनों करना दृविआर्थि रूप प्रदान करना भय या लालच में सत्तारूढ़ दल की चापलूसी करना,अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा और महिमा मंडन करना,भययालालच से सत्तारूढ़ दल की चापलूसी करना,अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा और किसी दूसरे की आलोचना करना जैसे अनेक अनुचित कार्य आजकल मीडिया द्वारा किए जा रहे हैं |दुर्घटना एवं

संवेदनशील मुद्दों को बढ़ा चढ़ाकर पेश करना, ईमानदारी, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा और साहस से सम्बंधित खबरों को नजरअंदाज करना,आज कल मीडिया का एक सामान्य लक्षण हो गया है | मीडिया के इस व्यवहार से समाज में अव्यवस्था और असंतुलन की स्थिति पैदा होती है प्रिंट मीडिया और टी० वी० एवं सिनेमा के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति का आगमन और प्रसार हो रहा है, जिससे समाज में अनावश्यक फैशन, अश्लीलता, चोरी, गुंडागर्दी जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है, इस पतन के कारण युवा पीढ़ी भी पतन के गर्त में धसती जा रही है | इंटरनेट के माध्यम से असामाजिक क्रिया कलाप युवाओं तक पहुंच रहे हैं, जिससे उनमें नैतिकता, संस्कृति और सभ्यता की लगातार कमी रही है | मीडिया का प्रस्तुतीकरण ऐसा होना चाहिए जो समाज का मार्गदर्शन कर सके, खबरों और घटनाओं का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार हो जिससे जनता का मार्गदर्शन होसके |[2]सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है | आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हजारों लोगों तक पहुंचा सकता है परंतु सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण के रूप में भी व्यवस्था कर दिया है जिसके कारण इनके विनियमन की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है |[3]अतः आवश्यक है कि निजता के अधिकार का उल्लंघन किए बिना सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए सभी बच्चों के साथ विचार-विमर्श कर नए विकल्पों की खोज की जाए ताकि भविष्य में इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचा जा सके | यह व्यस्था भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 एवं अनु० 21 में दिया गया है |[4]

मीडिया के द्वारा दी गई सूचना दो धारी तलवार की तरह होती है | एक ओर उसका उपयोग भ्रम और कहरता फैलाने में किया जा सकता है तो दूसरी ओर रचनात्मक कार्यों में भी किया जा सकता है | सूचना क्रांति के इस आधुनिक दौर में सोशल मीडिया की भूमिका को लेकर हमेशा सवाल उठते रहते हैं | आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक प्रगति में सूचना क्रांति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है किंतु सूचना क्रांति की ही उपज सोशल मीडिया को लेकर उठने वाले सवाल भी महत्वपूर्ण है | ये सवाल है क्या सोशल मीडिया हमारे समाज में ध्रुवीकरण की स्थिति उत्पन्न कर रहा है तथा समाज की प्रगति में सोशल मीडिया की क्या भूमिका होनी चाहिए ? हम एक ऐसी दुनिया में रखते हैं जहां सूचना के न केवल उपभोक्ता है बल्कि उत्पादक भी हैं यही अंर्तद्वन्द्ता इसके नियंत्रण में दूर कर देता है | प्रतिदिन कई विलियन लोग फेसबुक पर लॉगइन करते हैं | हर सेकेंड ट्विटर पर ट्वीट किया किए जाते हैं और इंस्टाग्राम पर कई तस्वीर पोस्ट की जाती है |

सूचना प्रौद्योगिकी, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण एवं संचार सुविधाओं के माध्यम से सोशल मीडिया द्वारा ध्रुवीकरण की बात की जाए तो हम पाते हैं कि अतीत में इस संबंध में कई प्रयोग किए गए थे | 1950 के दशक में सामाजिक मनोवैज्ञानिक सोलोमनअसचद्वारा मनोवैज्ञानिक प्रयोगों की एक पूरी श्रृंखला की शुरुआत गई थी |ये प्रयोग यह निर्धारित करने के लिए किए गए थे कि बहुमत की राय के आगे किसी व्यक्ति की राय किस प्रकार प्रभावित होती है | इसका यह निष्कर्ष सामने आया कि कोई व्यक्ति सिर्फ बहुमत की राय के साथ शामिल होने के कारण गलत जवाब देने के लिए तैयार था | कुछ लोगों ने उसका अपना उपहास उड़ने देने के कारण गलत जवाब दिए | यद्यपि 1950 के दशक से संचार का यह स्वरूप विकसित होकर नए रूप में प्रकट हुआ है, लेकिन इसके बावजूद मानव का स्वभाव इसके साथ सामंजस्य बैठाने में सफल नहीं हो पाया | कुछ हद तक यह धारणा ऑनलाइन फेक न्यूज़ के प्रभाव को भी इंगित करती है, जिसने समाज में ध्रुवीकरण के विस्तार में योगदान दिया है | सोशल मीडिया की साइट्स उत्प्रेरक की भूमिका निभाती है | उदाहरण स्वरूप ट्वीटर नियमित रूप से उन लोगों के अनुसरण हेतु प्रेरित करता है जो हमारे समान दृष्टिकोण रखते हैं वे सभी प्रक्रियाएं जो दुनिया भर के सामाजिक संबंधों को गहरा और घनिष्ठ कर रही है समाजशास्त्रीय वैश्वीकरण है[1]

वर्तमान परिपेक्ष्य में सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण लोगों के सोचने का दायरा संकुचित होता जा रहा है जो न केवल मतदान के समय व्यवहार के परिवर्तन लाता है बल्कि हर रोज व्यक्तिगत वार्ताओं में भी इसका भारी प्रभाव पड़ रहा है | अगर सोशल मीडिया के मूल अर्थ की बात की जाए तो कंप्यूटर, टैबलेट या मोबाइल के माध्यम से किसी भी मानव संचार या इंटरनेट पर जानकारी साझा करना सोशल मीडिया करना है इस प्रक्रिया में कई वेबसाइट एवं एप का योगदान होता है | सोशल मीडिया वर्तमान समय में संचार के सबसे बड़े साधन के रूप में उभर कर आया है और इसकी लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है | सोशल मीडिया द्वारा विचारों, सामग्री, सूचना और समाचार को तीव्र गति से लोगों के बीच साझा किया जा सकता है | सोशल मीडिया को एक तरफ जहां लोग वरदान मांगते हैं तो दूसरे तरफ इसे एक अभिशाप के रूप में भी देखते हैं |

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव की बात जाए तो यह समाज के सामाजिक विकास में मदद करता है उसके द्वारा प्रदत सोशल मीडिया मार्केटिंग जैसे उपकरण द्वारा लाखो प्रभावित ग्राहकों तक पहचान स्थापित की जा सकती और समाचार को प्रेषित किया जा सकता है | सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता उत्पन्न करने के सन्दर्भ में सोशल मीडिया को एक बेहतरीन उपकरण माना जाता है | इसके द्वारा समान विचारधारा वाले लोगों के साथ संपर्क स्थापित किया जा सकता है | विश्व की सुंदरतम कोने तक अपनी बातो के कम समय में तीव्रगति से अधिकतम लोगो तक पहुचाने के लिये सर्वश्रेष्ठ साधन बन चुका है मीडिया के माध्यम से हम विश्वसंस्कृति,विश्वसमाज, समाजशास्त्र की दृष्टि में विश्व के विभिन्न संस्कृतियों के बढ़ते तीव्र संपर्क और उससे होने वाले प्रभाव जो मूल्य प्रति महान

विचारधारा भाषा कला संख्यात्मक वस्तुओं और सामाजिक संस्थाओं में देखा जा रहा है उसे हम वैश्वीकारण कहते हैं जो सोशल मीडिया शब्द का प्रभाव रहा है कोने तक अपनी बात को कम समय में तीव्र गति से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए यह एक सर्वश्रेष्ठ साधन बन चुका है मीडिया के माध्यम से हम विश्व संस्कृति विश्व समाज से जुड़कर वैश्वीकारण को दर्शाते हैं|6

वर्तमान भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया को शिक्षा प्रदान करने के संबंध में एक बेहतरीन साधन माना जाता जा रहा है | इसके द्वारा ऑनलाइन जानकारी का तेजी से हस्तांतरण होता है | इसके द्वारा ऑनलाइन रोजगार के बेहतरीन अवसर प्राप्त होते हैं | साथ ही व्यवसाय चिकित्सा नीति निर्माण को प्रभावित करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है | वर्तमान समय में शिक्षक एवं छात्रों द्वारा फेसबुक ट्विटर आदि जैसे प्लेटफार्म का प्रयोग किया जा रहा है | इसके द्वारा शिक्षक एवं छात्रों के मध्य दूरी सिमटकर कम हो गई है | प्रोफ़ेसर, स्काइप, ट्विटर और अन्य जगहों पर इसके मदद से लाइव चैट करते हैं | सोशल मीडिया के कारण शिक्षा आसान हो गई है |

आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण के भौतिक वादों को मानना है कि सोशल मीडिया लोगों के अवसाद और चिंता के प्रसार का एक सबसे बड़ा कारण है | सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से सोने की आदतों में बदलाव, साइबर अपराध बच्चो के प्रति लगातार बढ़ते दबाव और एक प्रभावशाली प्रोफाइल युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रही है | इसमें अत्यधिक व्यस्तता के कारण अन्य कार्यों के लिए बहुत कम समय बचता है एवं अन्य गंभीर मुद्दों की उत्पत्ति होती है जैसे ध्यान कम लगना, चिंता एवं अन्य मुद्दे | इसके अत्यधिक प्रयोग एवं गोपनीयता से निजता में कमी आती है | यह उपयोगकर्ता को साइबर अपराधी जैसे हैकिंग, पहचान संबंधित चोट फिशिंग अपराधो आदि के प्रति संवेदनशील बनाता है |

समकालीन दृश्य में सोशल मीडिया का दुरुपयोग भी कई रूपों में किया जा रहा है इसके जरिए न केवल सामाजिक और धार्मिक उन्माद फैलाया जा रहा है | बल्कि राजनीतिक स्वार्थ के लिए भी गलत जानकारियां पहुंचाई जा रही है | इससे समाज में हिंसा की तो बढ़ावा मिलता ही है साथ ही हमारी सोच को भी नियंत्रित करता है | भारत एक मौखिक समाज था संपूर्ण संचार व्यवस्था समाज में मौखिक रूप से चलती है बड़े-बड़ेव्यापार मौखिक होते थे | यह मौखिक आज मीडिया समाज बन गयी है विश्व आर्थिक मंच की एक रिपोर्ट के अनुसार सोशल मीडिया के जरिए झूठी सूचना का प्रसार उभरते जोखिम में से एक है यकीकनयह देश की प्रगति की राह में रुकावट है और ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हमारी सरकार इसमें दखल कर इस पर लगाम लगाने का प्रयास करें |केंद्र सरकार ने सूचना तकनीक कानून की धारा-79 में संशोधन के द्वारा फेसबुक और गूगल जैसी कंपनियों की जवाबदेही तय करने का प्रयास किया था | इसके तहत आईटी कंपनियां की फेक न्यूज शिकायतों पर न केवल अदालत और सरकारी संस्थाओं बिल्कुल आम जनता के प्रति भी जवाबदेही होगी | देश जैसे-जैसे आधुनिकीकरण के रास्ते पर बढ़ रहा है चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं | ऐसे में भारत को कठोर कानून की जरूरत है जो सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री का इस्तेमाल करने वालों पर शिकंजा कसने के लिए बनाया गया था इसके अलावा सोशल मीडिया के जरिए सोशल मीडिया गतिविधियों का भी आपत्तिजनक सामग्रियों को हटाया जा सकता है | सोशल मीडिया का प्रभाव विभिन्न प्रकार के समाज पर पडा है स्पेन्सर, दुर्खीम, तथा मार्क्सद्वारा वर्गीकृत किया गया है |[7 8 9 10]

भारत संविधान के अनुच्छेद 19 में की गई है सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और इसे हजारों लोग तक पहुंचा सकता है परंतु सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने के रूप में स्थापित कर दिया है जिसके कारण इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है | आवश्यकता के अधिकार का यह सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए सभी बच्चों के साथ विचार कर नए विकल्पों की खोज की जानकारी इसके संभावित से बचा जा सके | प्रेस इनफार्मेशन ब्यूरो, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया आज यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ इंडिया न्यूज़ एजेंसीया है जो देश को संपूर्ण विश्व के साथ जोड़ते हैं |

समाजशास्त्र की दृष्टि में विश्व के विविध संस्कृतियों में बढ़ते तीव्र संपर्क और उससे होने वाले प्रभाव जो मूल्य, प्रतिमान, विचारधारा, भाषा, कला, संज्ञानात्मक वस्तुयों और सामाजिक संस्थाओ में देखा जा रहा है, उसे हम वैश्वीकरण कहते है जो सोशल मीडिया शब्द का प्रभाव रहा है|[11]

मीडिया का प्रभाव नैतिकता के संदर्भ में:[12]

मीडिया को प्रचार प्रसार का दायित्व पत्रकारिता पर है, पत्रकारिता पत्रकार करता है | पत्रकार समाज का प्रतिबिंब ही सम्मुख रखते हैं,वे जानकारी विचार, अभीमतसबके सामने लाने के विशिष्ट भूमिका निभाते हैं वह तथ्यों को खोजते हैं उद्घटीत करते हैं दर्ज करते हैं, सवाल उठाते हैं, लोगों के विचार करने के लिए इनपुट देते हैं मनोरंजन करते हैं और लोगों को प्रेरित करते हैं | वे समाज को जानकारी देते हैं तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करते हैं |

ब्रिटेन के मैनचेस्टर के से प्रकाशित होने वाले मेनचेस्टर डार्जियन के एक सौ वर्ष पूरे पर अखबार के संपादक सी० पी० स्कांट जिन्हें स्वयं इस अखबार का संपादन करते हुए 50 वर्ष हो चुके थे मई 2021 में एक हंड्रेड ईयर्स शीर्षक से एक आलेख लिखा जिसमें आज भी विशेष समाचार पत्रों और मूलतः पत्रकारिता की स्वतंत्रता का पाथेय माना जाता है | इसे पत्रकारिता में नैतिक मानदंडों का भी

निर्देशक माना जाता है स्कांट ने जो बातें अखबारों के लिए लिखी और उन पर अमल किया वे किसी भी प्रकार की मीडिया के लिए कालातीत तथा समुचित है | आखिर मीडिया की प्रौद्योगिकी उपकरण, अवयव और प्रस्तुति का तरीका बदल जाने से उसके आधारभूत सिद्धांत नहीं बदल जाते पत्रकारिता की आत्मा वही रहती है | स्कांट ने लिखा है,"अखबारों के दो पक्षे हैं एक दूसरे किसी के व्यवसाय तरह एक व्यवसाय है, और इसे जीवित रखने के लिए खर्च करना यानि राजस्व कमाना पड़ता है|" लेकिन यह व्यवसाय से बढ़कर भी कुछ है यह एक संस्था है यह पूरे समाज के जीवन को प्रतिबिंबित करता है तथा समाज को प्रभावित भी करता है यह अपने स्वरूप पर एक तरह से सरकार का उपकरण भी है यह लोगों के मानसिक और आत्मा से व्यवहार करता है | इसका नेतृत्व और भौतिक अस्तित्व है और इसका चरित्र तथा प्रभाव इन दो शक्तियों के संतुलन से होता है यह सिर्फ लाभ कमाने तथा पावर शक्ति हासिल करने को अपना पहला लक्ष्य बना सकता है या फिर यह स्वयं को अधिक बड़े तथा महत्वपूर्ण कार्य के लिए तैयार कर सकता है |"

स्काट मानते थे कि अखबार का एक नैतिक मानदंड जो उनकी स्वतंत्रता होनी चाहिए | उसकी चाहे जो स्थितियां चरित्र हो कम से कम उसकी अपनी आत्मा होनी चाहिये उच्च नैतिक मानदंडों का बखान करते हुए स्कांत ने लिखा है अखबार का प्राथमिक कर्तव्य समाचार इकट्ठा करना है | पत्रकरिता का अपनी आत्मा के मरने की खतरा मानते हुए उसे यह पक्का करना चाहिए कि उसकी खबरें दूषित या दागी न हो वह अपने पाठकों के लिए चाहे जो (सामग्री) पेश करें उसके (संपादकीय सामग्री के) प्रस्तुतीकरण उज्जवल सत्य के साथ तिल मात्र से छेड़छाड़ नहीं होना चाहिए | उसे अपना विचार रखने की संपूर्ण स्वतंत्रता है लेकिन तथ्य पवित्र है | अखबारों के साथ किसी भी प्रकार का छेड़छाड़ नहीं होना चाहिए अखबारों के माध्यम से प्रोपेगेंडा घृणास्पंदन है विरोधी के आवाज न्यायपूर्ण ढंग से मित्र की आवाज की तरह सुनी जानी चाहिए अखबरों के मामले में ज्यादा खुलापन की हिमायत हो सकता है, लेकिन इसका निष्पक्ष होना बेहतर है |

भारत के स्वतंत्रता संग्राम को महात्मा गांधी, तिलक, लाला लाजपत राय, वीर सावरकर, माखनलाल चतुर्वेदी, बाबूराव विष्णु पराडकर,गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे अनगिनत संपादक सेनानियों ने पत्रकारिता का यही मानदण्ड निरुपित किए है | स्वतंत्रता संग्राम के इन महान सेनानियों ने सत्य लिखने के लिए ब्रिटिश सरकार के दबाव की चिंता की उसके दमन की पत्रकारिता के उच्च नैतिक आदर्शों पर चलते हुए उन्होंने देश को जगाया, प्रेरित किया तथा ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया | महात्मा गांधी तो कहते थे कि "जो व्यक्ति धर्म के मार्ग पर चलता है, वह कभी असुरक्षित तथा असहाय नहीं हो सकता है," | पत्रकारसमाज का प्रतिबिम्ब ही सम्मुख रखते हैं,वे जानकारी, विचार अभिमत, सबके सामने बांटने का विशिष्ट भूमिका निभाते हैं,वे तथ्यों को खोजते हैं, उद्घाटित करते हैं, दर्ज करते हैं समान उठाते हैं, लोगों के विचार करने के लिएइनपुट देते है | मनोरंजन करते हैं और लोगों को प्रेरित करते हैं | वे समाज को जानकारी देते हैं और लोकतंत्र तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करते हैं |

मीडिया ने दुनिया भर में भारी निवेश गलाकाट प्रतिस्पर्धा और महंगी टेक्नोलॉजी के आधार पर विस्तार और मीडिया के अतिरिक्त अन्य धंधों में फैलाव करने के लिए पत्रकारिता के नीति नियमों को ताक पर रख दिया है | अधिकतर बड़े मीडिया संगठन शेयर बाजार में सूचीबद्ध है इसलिए लाभ कमाना एक प्रमुख कर्तव्य बन गया है | अपने जैसा जैसे दूसरे मीडिया से हमेशा आगे रहने की होड़ इस कद्र है कि प्रतिस्पर्धा को नीचे गिराने, बदनाम करने और उसके पाठक, दर्शक या श्रोता किसी भी तरह छीन लेने की जुगत लगाई जाती है |

मीडिया को विकास के भागीदारी बनाने के साथ-साथ शासन प्रक्रिया में माध्यम बनाना है जो जनता के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए इसमें नयापन लाने की आवश्यकता है | इस प्रकार, यह मान्यताओं कि एक संतुलित ढांचा विकसित कर सकता है और उसे व्यवहार में ला सकता है, जिसे सार्वजनिक मान्यता है या मूल्य माना जा सकता है | जन धारणा को सार्वजनिक मान्यता में बदलते समय यदि मीडिया प्रशासन और मध्यस्थता शासन दोनों सार्वजनिक जवाबदेही को फिर से ताजा करते हैं तो सत्य निष्ठा हासिल की जा सकती है |

पार्थ सारथी (2018)ने नियंत्रित, संगठनात्मक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को पहचानने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है जिसके तहत मीडिया अर्थव्यवस्था उभरी है और दृढता और निर्णय लेने के साथ उसका गठन किया गया है | उस पेचीदा क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए जिसमें मीडिया अर्थव्यवस्था का संचालन किया जा रहा है | हम मानते हैं कि यह प्रयोजन न तो अनिवार्य रूप से स्पष्ट है और ना ही किसी तरह की ताकतों | कर्ताओं द्वारा थोपा गया है |[3]

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र में यह अध्ययन किया गया है कि भारतीय समाज में मीडिया का क्या प्रभाव रहा है | इस समाज में मीडिया का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है | मीडिया का यह योगदान सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ने समाज को किस प्रकार प्रभावित किया है |

निष्कर्ष

मीडिया को विकास में भागीदारी बनने के साथ-साथ शासन प्रक्रिया में माध्यम बनाना है, जिससे न्यायपालिका, कार्यपालिका एवं विधायिका में अपना योगदान चौथे स्तंभ के रूप में दे सके |समाज में प्रभावी शासन को फिर से सुनिश्चित करने के लिए जनता और मीडिया संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक मान्यताओं का उपयोग करने की आवश्यक प्रभावी होगी |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *https://hindi.webdunia.com.*
2. *https://www.drishtiias.com*
3. *https://www.deepawali.co.in.*
4. *Modernity Post-modernity and Neo-Sociological Theories S.L.DOSI Page-313 ISBN-81-7033-743-7-2015 |*
5. *Constitutional of India – Dr.Jay Jay Ram Upadhyay- Central Law Agency-2019 Page- 9*
6. *Malcolm,waters,globalization,routledgeLondan,InternationalSocicty Vol.15 Now,1 June 2000.*
7. *Spencer, The Principles of sociology, Vol-1 chap-X*
8. *Emile Durkheim,The Rules of Sociological Method chap-IV,PP. 66-68.*
9. *karlmarksinhisAriticles " British Rule in india quoted by Bottomore IBID.pp.117-15.*
10. *समाजशास्त्र एक (संपूर्ण पुस्तिका)- प्रोफेसर डॉ जी० के अग्रवाल-2015 पृष्ठ 54-55.*
11. *समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धांत-डॉ० रविकुमार मिश्र - विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र) नागरिक पी० जी० कॉलेज, जंघई जौनपुर (सम्बद्ध - पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर) ISBN : 978-81.7004-347-8-2021-पृष्ठ -335.*
12. *योजना सितंबर-2020 विकास को समर्पित पृष्ठ 31-36 ISSN-0971-8397*
13. *पार्थसारथी, वी. (2018) बिटवीन स्ट्रैटेजिक इंनटेंट एंड केसीडर्ड साइलेंस रेगुलेटरी कूटर्स ऑफ द टीवी बिजनेस ए. एथिक, वी पार्थसारथी और एस० श्रीनिवास के संस्कारों में द इंडियन मीडिया इकोनोमिक,खण्ड-1 औधोगिक गतिशीलता और सांस्कृति अनुकूलन, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |*